विश्व न्याय मन्दिर

1 जुलाई 2013

विश्व भर में आगामी 114 युवा सम्मेलनों के प्रतिभागियों को

परम प्रिय मित्रों,

जब बाब का महान व्यक्तित्व, महज 25 वर्ष की आयु में, विश्व को अपना क्रांतिकारी संदेश देने के लिये उठ खड़ा हुआ, तब जिन लोगों ने उनकी शिक्षाओं को स्वीकारा और प्रसारित किया, उनमें से कई युवा थे, यहाँ तक कि स्वयं बाब से भी कम उम्र के थे। उनकी वीरता, जिसकी चकित कर देने वाली प्रबलता को पूर्ण रूप से शहीदों की गाथा में अमर किया गया है, सदियों तक मानव इतिहास की कथा को प्रकाशित करती रहेगी। इस प्रकार एक ऐसे प्रतिमान की शुरुआत हुई जिसमें, प्रत्येक युवा पीढ़ी ने, विश्व को नये सिरे से गढ़ने के लिये उसी दिव्य आवेग से प्रेरणा लेते हुए एक विकासशील प्रक्रिया के नवीनतम चरण में योगदान देने के अवसर को कस कर थाम लिया है, जो मानवजाति का जीवन परिवर्तित करेगी। यह वह प्रतिमान है जिसमें 'बाब' के काल से वर्तमान तक कोई क्रम भंग नहीं हुआ है।

आपके आध्यात्मिक पूर्वजों के जीवन-पर्यन्त परिश्रम व त्याग ने विभिन्न देशों में प्रभुधर्म की स्थापना करने के लिये और एक उद्देश्यपूर्ण वैश्विक समुदाय के प्रकटन में शीघ्रता लाने के लिये बहुत कुछ किया है। यद्यपि जो कार्य आपके समक्ष हैं वे उनके कार्यों के समान नहीं हैं, फिर भी जो ज़िम्मेदारियाँ आपको सौंपी गयी हैं, वे कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। कई दशकों के बाद, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की पर्याप्त समझ प्राप्त करने की और उसमें निहित सिद्धान्तों को लागू करने की इस व्यापक समुदाय की विश्वव्यापी मेहनत के परिणाम स्वरूप कार्य की एक शक्तिशाली रूपरेखा उभर कर आयी है जो अनुभव के साथ परिशुद्ध हुई है। आप भाग्यशाली हैं कि आप इसकी पद्धतियों और तरीकों से परिचित हैं, जो अब बहुत अच्छी तरह से स्थापित हो चुके हैं। इनके क्रियान्वयन में दृढ़ रहने से आप में से कई ने स्वयं अब तक इन दिव्य शिक्षाओं की समाज-निर्माणकारी शक्ति के चिह्न देखे होंगे। जिस सम्मेलन में आप भाग लेंगे, उसमें आपको उस योगदान के सम्बन्ध में विचार करने के लिये आंमंत्रित किया जा रहा है जो हर उस युवा द्वारा दिया जा सकता है, जो बहाउल्लाह के आह्वान का प्रत्युत्तर देना चाहता है और उस शक्ति को प्रसारित करने में सहायता करना चाहता है। आपकी सहायता के लिये, कुछ ऐसे विषयों

की पहचान की गयी है जिनकी आप जाँच कर सकते हैं, जिनमें सर्वप्रथम है आपके जीवन के वर्तमान समय पर विचार करना।

विश्व भर में एक साझा उद्देश्य वाले बहुत से युवा सम्मेलनों में लाखों ऐसे युवाओं को एकत्र किया जाना है जिन में बहुत कुछ समान है। यद्यपि आपकी वास्तविकताओं को व्यापक रूप से विविध परिस्थितियों ने आकार प्रदान किया है, फिर भी सकारात्मक बदलाव लाने की चाह तथा अर्थपूर्ण सेवा की क्षमता, ये दोनों, जीवन की आपकी अवस्था की विशेषताएँ हैं, जो न तो किसी जाति या राष्ट्रीयता तक सीमित है, न ही भौतिक संसाधनों पर निर्भर हैं। युवावस्था की यह उज्ज्वल अवधि जिसके आप सभी सहभागी हैं, सभी के द्वारा अनुभव की जाती है -- परन्तु यह अल्पकालीन होती है, और अनेक सामाजिक ताकतों का प्रहार सहती है। अतः उन लोगों के बीच रहने का प्रयास करना कितना महत्पूर्ण है जिन्होंने, अब्दुल-बहा के शब्दों में कहा जाये तो “जीवन का फल तोड़ लिया है”।

यह ध्यान में रखते हुए, हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है कि सामुदायिक-निर्माण की गतिविधियों के संचालन के माध्यम से, तथा दूसरों के प्रयासों को व्यवस्थित, समन्वित, या फिर प्रशासित करने के माध्यम से आप में से कई लोग पहले से ही सेवा में संलग्न हैं; इन सभी प्रयासों में आप एक बढ़ते हुए स्तर की ज़िम्मेदारियों को अपने कंधों पर ले रहे हैं। कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि वह आप ही का आयु-वर्ग है जो किशोरों और बच्चों को भी, उनके नैतिक और आध्यात्मिक विकास में सहायता करने में सबसे अधिक अनुभव प्राप्त कर रहा है और उनके भीतर, सामूहिक सेवा तथा सच्ची मित्रता की क्षमता को पोषित कर रहा है। आखिरकार, उस दुनिया से अवगत रहते हुए, जिस में से इन युवा आत्माओं को अपना रास्ता निकालना है, तथा जिसके अपने ही खतरे हैं और अपने ही अवसर भी, आप आध्यात्मिक दृढ़ीकरण और तैयारी के महत्व को तत्परता से समझ सकते हैं। इस बात के प्रति जागरूक रहते हुए, कि बहाउल्लाह मानवजाति के आंतरिक जीवन और बाहरी परिस्थितियों में रूपान्तरण लाने के लिये आये हैं, आप अपने से छोटी उम्र वालों को उनके चरित्र के परिष्करण में तथा उनके समुदायों के कल्याण की ज़िम्मेदारी उठाने की तैयारी करने में सहायता प्रदान कर रहे हैं। जब वे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, तब आप उनकी अभिव्यक्ति की शक्ति को बढ़ाने में उनकी सहायता करते

हैं, तथा उनके भीतर नैतिक बोध की जड़े मजबूत करने में भी सहायता करते हैं। ऐसा करके, जब आप बहाउल्लाह की इस निषेधाज्ञा का पालन करते हैं कि: “शब्दों को नहीं, कर्मों को अपना आभूषण बनाओ” तब उद्देश्य के सम्बन्ध में आपका अपना बोध भी अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित होता जाता है।

व्यक्ति की गतिविधि जो भी रूप धारण करे, सेवा के पथ का अनुसरण करने के लिये आस्था और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। इस सम्बन्ध में, इस पथ पर दूसरों के साथ चलने के लाभ असीम हैं। प्रेममय साहचर्य, परस्पर प्रोत्साहन, तथा मिलकर सीखने की इच्छा, युवाओं के हर उस समूह के स्वाभाविक गुण हैं जो एक ही ध्येय के लिये प्रयासरत होता है, और यही उन आवश्यक सम्बन्धों की भी विशेषता होनी चाहिये जो समाज के घटकों को एक साथ बांधता है। इस आधार पर हम आशा करते हैं, कि सम्मेलन के अन्य प्रतिभागियों के साथ मेलजोल के माध्यम से, जो बंधन आप विकसित करेंगे वे स्थायी सिद्ध होंगे। मित्रता और साझे ध्येय के ये बंधन, अवश्य ही, इन सम्मेलनों के समापन के एक लम्बे समय बाद भी आपके पगों को दृढ़ बनाये रखने में सहायक हों।

सामूहिक कार्य से उत्पन्न होने वाली सम्भावनाएँ समुदाय-निर्माण के कार्य में विशेष रूप से स्पष्ट दिखायी देती हैं, जो एक ऐसी प्रक्रिया है जो दुनिया भर में ऐसे कई क्लस्टरों में, तथा मुहल्लों और गाँवों में संवेग प्राप्त कर रही है जो सघन गतिविधि के केन्द्र बन चुके हैं। ऐसे परिवेशों में काम के मामले में युवा प्रायः सबसे आगे होते हैं -- न केवल बहाई युवा, बल्कि ऐसी ही सोच रखने वाले अन्य युवा भी, जो बहाईयों द्वारा शुरू किये गये कार्य के सकारात्मक प्रभावों को देख सकते हैं तथा एकता और आध्यात्मिक परिवर्तन की मूलभूत परिकल्पना को समझ सकते हैं। ऐसे परिवेशों में, ग्रहणशील हृदयों के साथ बहाउल्लाह का प्रकटीकरण साझा करने की, तथा आज के विश्व के लिये उनके संदेश के निहितार्थ को समझने का प्रयत्न करने की अनिवार्यता गहराई से महसूस की जा रही हैं। जब समाज में इतना कुछ निष्क्रियता और उदासीनता को आमन्त्रित करता है या, इससे भी बदतर, स्वयं अपने और दूसरों के लिये हानिकारक आचरण को प्रोत्साहन देता है, तो उन लोगों द्वारा एक सुस्पष्ट विपरीतता पेश की जाती है जो सामुदायिक जीवन के एक आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने वाले प्रतिमान का विकास करने और उसे बनाए रखने के लिए एक जन समुदाय की क्षमता बढ़ा रहे हैं।

फिर भी, यद्यपि कई लोग आपकी गत्यात्कता और आदर्शों की सराहना करते हैं, तथापि, व्यापक जगत के समक्ष इन प्रयासों का सच्चा महत्व कम स्पष्ट है। परन्तु इस शक्तिशाली, रूपान्तरणकारी प्रक्रिया में आप अपनी भूमिका से अवगत हैं, जो, समय के साथ, एक ऐसी सार्वभौम सभ्यता को जन्म देगी जो मानवजाति की एकता को प्रतिबिंबित करेगी। आप भलीभाँति जानते हैं कि मन और आत्मा की वे आदतें जिन्हें आप अपने और दूसरों के भीतर पोषित कर रहे हैं, कायम रहेंगी, तथा विवाह, परिवार, पढ़ाई, कामकाज, यहाँ तक कि निवास-स्थान से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णयों को प्रभावित करेंगी। इस विस्तृत संदर्भ का बोध उस रूप बिगाड़ने वाले दर्पण को चूर-चूर करने में सहायक होती है, जिस में रोज़मर्रा की परीक्षाएँ, कठिनाईयाँ, असफलताएँ, तथा गलतफहमियाँ अलंघ्य लग सकती हैं। और उन संघर्षों में, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास में आम होते हैं, प्रगति करने की आवश्यक इच्छा का उस समय अधिक सरलता से आह्वान किया जा सकता है जब व्यक्ति की ऊर्जा एक उच्चतर लक्ष्य की ओर मोड़ी जा रही होती हैं -- उस समय और भी जब व्यक्ति एक ऐसे समुदाय का हिस्सा होता है जो उस लक्ष्य के लिए एकजुट होता है।

ये सभी विचार एक समावेशी और निरन्तर विस्तार प्राप्त कर रहे वार्तालाप की ऐसी शुरुआत है जो इन सम्मेलनों के माध्यम से, और निश्चित ही इनके परे फैलेंगे जब आप दूसरे अनेक लोगो को ऐसी गंभीर परिचर्चाओं में शामिल करेंगे जो इस बात की सम्भावनाओं के प्रति कि क्या सम्भव है हृदय को उन्नत और मन को जागृत करती है। आपके सामूहिक अनुभव से सहायता प्राप्त करके आपके विचार विमर्श और समृद्ध हो जायेंगे। इस अनुकूल समय में, हमारे हृदय आपके साथ होंगे, और प्रत्येक सम्मेलन की समाप्ति के साथ, हम उत्सुकतापूर्वक देखेंगे कि उसके बाद अनुगमन क्या होगा। प्रत्येक सभा के लिये हम उस सर्वशक्तिशाली से यह याचना करेंगे कि वह, उसके प्रतिभागियों को अपनी अपार कृपा का एक अंश प्रदान करे, यह जानते हुए, जैसा कि आप भी अवगत हैं, कि दिव्य सहायता का आश्वासन उन सब लोगों को दिया गया है जो बहाउल्लाह के चमत्कृत कर देने वाले आह्वान के उत्तर में मानवजाति की सेवा करने के लिये उठ खड़े होते हैं।

-विश्व न्याय मंदिर